।। सौदागरी ग्रन्थ ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ सौदागरी ग्रन्थ का अनुवाद प्रारम्भ ||

|| चौपाई ||

सौदागरी चल्या जीव सोदे, भरत खण्ड मे आया ।
केइयक कर गया लाभ कमाई, केइयक मूल ठगाया ।।१।।

लोग जैसे छोटे छोटे शहरोसे वाणिज्य व्यापार करके कमाई करनेके लिये बंबई सरीखे बडे शहरमें आते है और आनेपे कई लोग लाभ कमाई करते है तो कई लोग लाभ कमाई करनेके लिये लाई हुई मुल रक्कम गमा देते है । इसीप्रकार जीव देश देशसे(निराकारके १३ लोक महामाया, प्रकृती, ज्योती, अजर,आनंद,वजर,इखर,अनहद,निरंजन,निराकार, शिवब्रम्ह,महाशुन्य पारब्रम्ह साकारी ३ लोक १४ भवन,४ पुरीयाँ,यमलोक)सदा के लिये आवागमन के कालके दु:खसे निकले और अनगिनत महासुखमें जावे यह सौदा करने मृत्युलोकके भारत देशमें मनुष्य देह लाये है । ऐसा देह धारण करनेसे रामनाम याने काल के दु:खसे निकलने का परमात्मा का नाम प्राप्त होता । कई जीव भरतखंड्में जनम लेते और रामनाम देहमें प्राप्त करते और अपना जनम-मरनका चक्र सदाके लिये खतम् करते । तो कई जीव भरतखंड मे आनेपर भी यह भारी मनुष्य देह पांच प्रकारके शब्द, स्पर्श, रुप,रस,गंध इन विकारोमे और कुंटुब परीवार के मोह मायामें लगाकर गमा देते ।।।१।।

इन्द्रादिक ब्रम्हादिक बंछत, ओ नर तन हे भाई ।
राम भगत अर साध समागम,इसो लाभ इण माँ ही ।।२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,चार प्रकार के मायावी देह है । होनकाल में पारब्रम्ह का सुक्ष्म ब्रम्हस्वरुप तन तथा ३ लोक १४ भवन में साकारी माया के तीन प्रकार के तन है ।

१) स्वर्गके देवतावोंका तेजपुंज(अग्नीका देह)का तन जिसमे जीवको मन चिंत्या सुख मिलते ।

२)नरक का याचनिक देह-जिसमे जीव पे कितना भी असह्य दु:ख पडा तो भी देहसे प्राण नही निकलता तथा मृत्युलोकके ८४ लाख प्रकारके मलमूत्रके शरीर जहाँ जीवको मरण अनचिंत्याही आता । ऐसे मलमूत्रके ८४ लाख प्रकार के शरीरोमें ही एक मनुष्य शरीर है । यह मनुष्य शरीर ऐसा है की,इसे मनचिंत्या सुख भोगनेवाला स्वर्गका ३३करोड देवता तथा इन देवतावोका राजा इंद्र और इंद्रके उपर का सुख भोगनेवाला सतलोकका नाथ ब्रम्हा,बैकुंठ का नाथ विष्णू,कैलास का राजा शंकर तथा उनके लोकके सभी देवता वंछना करते । ये ब्रम्हा,विष्णू,महेश तथा इंद्र तथा उनके लोको के सभी देवता रात दिन आँखो से देखते की हमे तेजपुंज के देह से सदा रातदिन मन चिंत्या सुख मिलते और वे सुख हम भोगते और साथमे कालके मुख से मुक्त होने के लिये परात्परी परमात्मादेव राम का स्मरण भी करते परंतु वह राम हमारे तेजपुंजके घटमें जरासा भी संचित नही होता ।

जिससे घट मे परात्परी परमात्मा प्रगट नही होता । उन्हें यह भी दिखता की मृत्युलोक में भरतखंड्में मनुष्यतनमें परमात्मा देव रामके साधु की संगत मिलती और वह संगत करनेपे परात्परी परमात्मा देव राम जीव को मनुष्य घट में सहज प्रगट होता । जिससे जीव सदाके लिये जन्म मरनसे मुक्त होता ऐसा भारी लाभ याने कमाई मनुष्यतनमें है यह उन्हें दिखता । इसलिये इस मलमूत्र के देह की चाहना ये ब्रम्हा,विष्णू,महेश तथा इंद्र करते ।।।२।।

नर तन बडो पदारथ पायो, भजन करो नर नारी ।
सिवरण जिसा बिसऱ्या सोदा, पशु संज्ञा ले धारी ।।३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयो को,ज्ञानी,ध्यानीयो को कह रहे की,जिस मनुष्य देह की चाहना ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तथा इंद्र करते । ऐसी भारी महंगी मनुष्य देह की वस्तू आज तुम सभी को प्राप्त हुई है । वह भी भरत देश में प्राप्त हुई है इसलिये आप सभी नर नारीयो इस मनुष्य तन से समय बेसमय परमात्मा देव का भजन करो । अगर परमात्मा देव का स्मरण करने का सौदा भूल गये और विकारी विषय वासना में ही भुले रहे और कुटुंब परिवार के मोह माया के भूले रहे तो मलमूत्र के ८४ लाख योनी में के पांचो विकारी सुख लेनेवाले पशु देह में पडे हुये जीव और मनुष्यतन में आया हुवा आपका जीव उसमे कुछ फरक नही रहेगा ।।।३।।

झके जंजाल जागताँ बिपता, सांज पडी जब सोयो ।
सुताँ बिपत पडी सपना मे, पशु उगांळेर खायो ।।४।।

मनुष्यतनमें आया हुवा हर जीव दिनको जागृत अवस्थामें नाना प्रकारके विपतावोसे भरी हुई मायावी जंजाल करता और श्याम पड्ने पे सोता और निंदमें सपनेमे वही बिपतावो के जंजालमें रात पुरी करता । जैसे ८४ लाख योनीके कुछ पशु जीव दिन को खाते और रात को खाई हुई हर वस्तू उगालते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते की,ऐसे पशुजीवके स्वभाव सरीखे अनेक मनुष्य जीव भारी मनुष्य पदारथ मिलने पे भी अपना मनुष्य देह गमाते ।।।४।।

घर की गांग्रत गयो जमारो ,उदम आपदा मांही ।
मुसे ठगे भरे एक उदर ,पशु संज्ञा आ पाई ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,इसप्रकार जीव मनुष्य तन पाने पर भी घर की गांगरत में याने माता,पिता,भाई,बहन,पत्नी,पुत्र,पुत्री इनकी मायावी आकांक्षाये पुरी करने में मगन हो जाता । इन सभी की आकांक्षावो को पुरी करने के लिये धन चाहिये इसलिये उधम धंदा करता और उस उधम धंदे में अनेक भारी भारी कष्ट झेलता और अनेको की गर्दन मरोड के घरवालो की चाहना पुरी करने के लिये धन जोड्ता । इस प्राप्त किये हुये धनसे वह खुदके लिये क्या करता तो सिर्फ पेट भरने का काम करता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयोंको कहते है की,सिर्फ पेट भरना यह मनुष्य

संज्ञा नही है । सिर्फ पेट भरना यह तो पशु संज्ञा है ।।।५।।

ग्यान ध्यान सुण साध समागम,सिंवरण कथा विलासा ।
जागे जीते राम ही सिंवरे,सुताँ ओई अभ्यासा ।।६।।

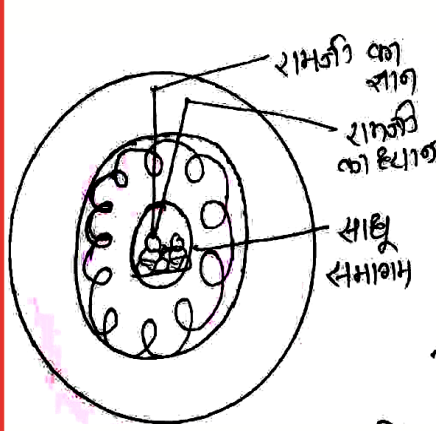

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मनुष्य संज्ञा क्या है तो काल से मुक्त करानेवाले रामजी का ज्ञान,रामजी का ध्यान करना । जो काल से मुक्त हुये और रामजी घट में प्राप्त किये हुये ऐसे साधुवो की,फिर चाहे वह ग्रहस्थी रहे या बैरागी रहे उनकी संगत करना और उनके मुखसे निकली हुई रामजी के देश की कथा विलास याने हर बाणी सुनना और उन्होंने बताये हुये विधीसे जागृत है जबतक रामजी का स्मरण करना । इसप्रकार से रामभक्ती और साधू समागम करने से निंद आने पे भी सतस्वरुप राम का ज्ञान, ध्यान,स्मरण और साधु समागम अपने आप होते ही रहेगा। ।।६।।

माया मोह भ्रम की रजनी, सुता जीव अगाई ।
सतगुरू आवाज करी अेक अेसी, राम कहो मेरा भाई ।।७।।

परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जैसे कोई गाँव में का एखाद मूर्ख मनुष्य गहरी अंधेरी रात में पुरे गाँव को चोर डाकूवोका भारी डर रहते हुये भी,ऐसे भारी धोके का कोई डर नही रखते हुये निश्चित होके सोता और धोका खाता इसीप्रकार सभी जीव त्रिगुणीमायाके सुखोके मोह में भ्रमीत होकर मनुष्यदेह गमा रहे है । त्रिगुणीमायाके सुखो में जालीम जमराज ओतप्रोत बैठा है और यह जमराज ४३२०००० सालतक ८४००००० योनी के जन्म मरन के चक्कर में हर साँस साँस में फसा रहा है यह जरासी भी भनक न लाते,मनुष्यदेह मायामोह में पुरेपुर लगा रहे है । यह धोके की समज सतगुरु को होने के कारण ये सतगुरु जीवो को आवाज दे देकर याने चिल्ला चिल्लाके समजा रहे की,इस माया के मोह में काल का भारी धोका है । इस धोके से बाहर निकलनेके लिये सभी नर नारीयोंको भाई कहके कह रहे है की, अरे भाईयों काल से मुक्त करानेवाले और माया के परे के अनगिनत सुख देनेवाले राम का स्मरण करो ।।।७।।

मिनखा देही शुभ हे ओसर राम भजन लिव लावो ।
भव सागर का दु:ख हे भारी ,जनम मरण मिटावो ।।८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी नर नारीयो को बता रहे की,अरे जीवो भवसागर का दु:ख भारी है । इस भवसागर में शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध इसके जीव को जरासे ही सुख है,परंतु ४३२०००० सालतक ८४००००० योनी में बारबार गर्भ में आकर जनमने का और कष्ट से भरा हुवा बूढापन पाकर मरने का भारी दु:ख है । ऐसे भारी

दु:ख से सदाके लिये निकलनेके लिये मनुष्य देहकी जरुरत है । वह मनुष्यदेह जो ब्रम्हा,विष्णु ,महादेव,(देवता)इंद्र और ३३ करोड देवता चाहनेपे भी नही मिलता ऐसा शुभ मौका आप सभी नर नारीयोंको मिला है । इसलिये माया मोह के निंद में गाढे न सोते हुये कालके दु:ख का भय रखकर जागृत होवो और महासुख के दाता रामजी के भजन से लीव लगावो ।।।८।।

सूताँ जलम अमोलक बीते ,जागे जब पिस्तावो ।
जिवडो पडयो जंजाला मांही ,सपने जलम ठगायो ।।९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयों को कहते है की,४३२०००० सालतक ८४००००० योनीयो के अनेक जुलूम कष्ट भोगने पे तथा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और इंद्र सरीखे देवतावो को मांगने पे भी न मिलनेवाला मनुष्यदेह जो तुम्हें मिला है ऐसा अमोलक देह माया मोह में लगे रहे तो बिना रामजी मिले बीत जायेगा । ऐसा अमोलक देह अंतीम साँस छोडने का समय आयेगा और जमराज की फौज सामने दिखेगी तब कितना भी जागृत हो गया तो भी मनुष्य तन गमा दिये यह पस्ताने के सिवा और कुछ भी हाथ में नही आयेगा । ऐसा पस्ताने का समय इसलिये आया की,दिन में घर के जंजालो में याने माता,पिता,भाई,बहन,पुत्र,पुत्री इनकी झुठी मायाकी आकांक्षा ये पूरी करने में अमोलक जलम लगा दिया और रात हाथ में थी वह इसी बिपतावो के सपनो ने ठग ली । इसप्रकार हर जीव का रात और दिन घर के जंजालो में बीत जाता और जमके हाथ जाने का अंतीम समय अपने आप आ जाता ।।।९।।

जीवन अलप अवध हे ओछी , माया सबे बिराणी ।
तितर बाज काल यूं दाबे , आसा सकळ बिलाणी ।।१०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयोको चेता रहे की जिस देहसे जनम मरण छूट सकता ऐसे मनुष्य देहकी आयु ४३२०००० सालके ८४००००० योनीके फेरेके सामने यह फेरा १०० सालका पकडा तो सिर्फ दस दिन की है । विष्णु की उम्र महाप्रलय पकडी तो इसकी आयु विष्णुके आयुके सामने पलोमें भी नही है । इसे गिनके ७७,७६,००००० साँस १०० साल के मिले है परंतु इसकी पक्की आयु अंदर का साँस बाहर निकाले इतनी याने दो सेकंद की ही है । जैसे बाज पंछी तितर पंछी को उसको उड्ने की समज आने के पहले ही कुचल देता ऐसा जालीम जमराज जीव को अचिंत्याही कुचल देता तब धन,राज,घर,महल यह भारी माया जो पुरे मनुष्य देह के उम्र में कमाई थी वह अपनी होते हुये भी पराई होती कारण वह माया जीव के साथ नही चल सकती और काल के मुख से निकलने की आशा पूरी मिट जाती ।।।१०।।

तन धन जोबन देखत जासी ,ज्यू बादल की छायाँ ।
अंजली नीर ओस का पाणी , सब सपना की माया ।।११।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हर मनुष्य जीवको कह रहे की,यह पांच तत्व का मनुष्यदेह, यह हिरा,पन्ना,सोना,चांदी,रुपये,खेतीबाडी,बंगला,प्लॉटस आदि प्रकारका धन तथा पांचो इंद्रियो की पूर्ण जवानी यह आँखों के सामने देखते देखते चली जायेगी । जैसे बेसाख में सुरज तपता और जीव पे बादल की छाया आती और उस सुरजके तपनके दु:खों के सामने बादल के छाया का सुख अच्छा लगता और वह जीव लेता और वह जीव सुख लेता नही जबतक वह छाया खतम् हो जाती । इसप्रकार होनकाल के दु:ख के सामने यह तन का सुख,धन का सुख और जवानी का सुख जाने मे देर नही लगती । जैसे– अंजुली में लिया हुवा पानी और ओस का पानी जाने में देर नही लगता ऐसे जिस तन,धन और जवानी के भरोसे सुख मिलने की चाहना से जीव बैठा है वह जाने में देर नही लगती । जैसे सपने में मनुष्य को माया का सुख मिलता वह सुख जागृत होते ही खतम् हो जाता । इसीप्रकार मनुष्यतन के सौ साल में तन,धन और जवानी का सुख लेता । वे सुख शरीर छुटते ही सपनो के सुखों समान मिट जाते ।।।११।।

माता पिता सुत नार स्नेही ,इण ठग नगरी जीव मोयो ।
समझ्यो नही मुसाफर पेली , जलम ठगायर रोयो ।।१२।।

ये माता,पिता,पुत्र,नारी तथा स्नेहीयो ने जीव को जनम–मरण से मुक्त होने के कारज में न जाने देते । अपने मायावी विकारी सुखों की पूर्तता करा लेने में लगा दिया । और दुर्भाग्यवश जीव भी इन माता,पिता,पुत्र,नारी तथा स्नेहीयो के ठग नगरी में मोहीत हो गया । यह जीव जबतक रामजी का स्मरण कर सकता था तब तक स्मरण करना समजा नही और जब शरीर छोड्ने का अंतीम समय आया और काल का महादु:ख सामने दिखने लगा तब मनुष्य जनम ठगे गया इसलिये दु:खीत होकर रोया ।।।१२।।

मै मेरी मे अवध गमाई, जलम बदीतो बाताँ ।
सिंवरण सोदा कदेहन किना ओ हीर मुसायो हाताँ ।।१३।।

मै और मेरे मे,मै हूँ और ये सभी कुटुंब परीवार,धन,महल मेरे है इसमे सारी उम्र गमा दी और सारा जनम इधर–उधर की बिना जरुरत की फालतू बाते करने मे बिता दी । रामजी का स्मरण करने सरीखा सौदा पुरी उम्र में कभी नही किया और अंतीम में सौदा करने के लिये लाया हुवा मनुष्य हिरा हाथो से गमा दिया ।।।१३।।

किजे काज आज ओ मोसर,अवद ओस का पानी ।
सिर पर काल रेण दिन गरजे ,जम जालम हे डाणी ।।१४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हर नर नारीयों को कहते है की,कालसे मुक्त होने का कार्य करना है तो आज यह अवसर आया हुवा है । यह अवधी ओसके पानी की तरह जाने में समय नही लगेगा । यह जम जालीम है और वह जीव का यह अवसर जाने की रात–दिन टक लगाके राह ही देख रहा है और जीव को जीव के हाथ से मनुष्य देह का

अवसर जाते ही क्रुर दु:ख भुगवाने के लिये रात-दिन जीव के सिरपर गरज रहा है ।।।१४।।

काळ कटक सूं सब जग धूजे,सुर नर घराँ अे हेडो ।
जलम्यां जका गया दिन दूरा यू ,अत काल दिन नेडो ।।१५।।

ऐसे जालीम काल के १४ जम और १४०००००० यमदूतो के बने हुवे फौज से नरक के किडे से लेकर तो बैकुंठ के विष्णुतक सभी ३ लोक १४ भवन और ४ पुरीया धुज रही है । यह काल के फौज की फेरीया देवतावो के सभी लोको से लेकर मनुष्य के नऊ खंडोके सभी घरो में पडती रहती है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जीवोको समजा रहे की जिस दिन जीव ने मनुष्य जनम लिया वह दिन तो प्रतीदिन दूर चला जा रहा है और अंतकाल का दिन, दिनो दिन नजदिक आ रहा है ।।।१५।।

बिती आय उपाव न कोई,होसी कागा रोळा ।
कुटुम्ब लुटेरो काया लूटे, जम जीव के दोळा ।।१६।।

ऐसेही यह आयु पुरी हो जाने पर फिर कोई भी उपाय नही लगेगा । फिर बाकी लोग जैसे किसी कौए के मर जानेपर काँव काँव करते हुये सेकडो कौवे जमा होकर गलबला करते वैसेही कुल के लोग जमा होकर गलबला करेगे और कुटुंब के सदस्य जो कलतक अपने थे वे लुटेरु के तरह इस काया के उपर जो कुछ गहने रहते वे सभी गहने छिन लेगे और जमो की फौज जीव के दोळे हो जाती ।।।१६।।

पीव पीव कर नार पुकारे, पूत पूत कर माई ।
कुरळे कुटुम्ब कबीलो सारो,इण जंवरो जंग मचाई ।।१७।।

जैसेही शरीर को प्राण छोडता और मृतक शरीर धरा पे गिरता वैसेही पत्नी मृतक शरीरको देख देखकर पती पती कहती और रोती और माँ बेटा बेटा कहकर रोती । इसप्रकार से अपने कुटुंब कबीले के सभी लोग बिलख बिलखकर रोते । ये कोई भी शरीर से निकले हुये प्राण पे जमो का भारी मार पड रहा होगा इसका जरासा भी बिचार नही करते । इधर शरीर से निकाले हुये प्राण के पिछे जालीम जमो की फौज लगती और हाथ में आये हुये प्राण को क्रुर कष्ट देने के लिये जमो के दूत जंग मचाते ।।।१७।।

सिर मे गुर्ज गळा मे फांसी, जालम हे जमराणो ।
सायक राम कदे नही सिवरे,ओ सब लोक बिराणो ।।१८।।

ये यमराज के दूत मनुष्य शरीर छुटने के बाद हाथ में आये हुये प्राण के सिर में गुरुज मारते और उस प्राण के गलेमें फासी डालते । यह यमराजा बडा जालीम है । सहायता करनेवाला राम था,उसका पूरी उम्र में कभी जरासा भी स्मरण नही किया जिससे यमराजा के क्रुर जुलुमो से बचाव नही हुवा और पत्नी,माता,भाई,परीवार के चाहनेवाले सभी सदस्य जो थे वे जीव के लिये पराये बन गये, प्राण के नही रह पाये ।।।१८।।

झूठो कुटुम्ब विषय सुख–झूठो,काया माया झूठी ।
जोवे खडा जोर नही लागे,आब उरस सूं तुटी ।।१९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयोको कह रहे की देहसे आत्मा बिछ्डनेके पहले जो कुटुंबके सदस्य सच्चे दिख रहे थे वे सभी जमके दूतोने प्राणको घेरते ही जमो के हाथ से छुडानेके लिये झूठे निकले । विषय वासनाके सुख जो सच्चे सुख दिख रहे थे वे जमोको जीवको कष्ट भोगाने में मदत करने में जुट गये । ऐसे विषय सुख भी झूठे निकले । जिस जवान काया के भरोसे प्राण मै मै कर रहा था ऐसे काया ने प्राण को जम से लढनेमें साथ नही दिया और वह काया प्राणको छोड्कर धरतीपेही पडी रही और जिस धन,राज इन मायाके भरोसे आगेके सुखोका गणित साधा था वह माया यही पडी रही । प्राणके साथ जरासी भी नही आयी । इसप्रकार प्राणके लिये काया और माया दोनो भी झूठी निकली । सभी लोग पत्नी,माता,पुत्र तथा परिवार के अन्य सदस्य और स्नेहीगण खडे खडे प्राण निकले हुये देह को देखते रहते और प्राण देहसे निकलना नही था इसका सोच भी करते परंतु,परमात्मा के यहाँ से आयु खुट जाने के कारण प्राण देह से बिछ्डे नही,देह में ही रहे तथा बिछ्ड गया तो जम मारे नही इस चाहणापर किसीका भी जोर नही चलता ।।।१९।।

ब्होत कुट म्बी जाय अकेलो,अेको संगन चाले ।
सब स्वारथ की देख सगाई,दिन बीता दु:ख पाले ।।२०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयों को कह रहे की जानेवाले प्राण से अनेक चाहनेवाले सदस्योसे कुटुंब भरा फूला था परंतु चाहनेवालेमें से एक भी मनुष्य जानेवाले प्राणके साथ नही चला,अकेले को ही यमका मार सहते यम के साथ जाना पडा । इसप्रकार जीव से ये माता,पिता,नारी,पुत्र,स्नेही जन हर कोई अपने–अपने मायावी विषयो के सुखो के पूर्तता के स्वार्थ से जुडा था । अंतीम समय पे जम के हाथ पडनेपे कोई साथ नही आया और जैसे जैसे प्राण के शरीर से बिछ्डनेके दिन व्यतीत होने लगे वैसे वैसे कुटुंब परीवारसे देह बिछ्ड जाने का दु:ख कम होने लगा । आज के जैसा दु:ख कल नही रहा,कल के जैसा परसो,परसो के जैसा तरसो दु:ख मालूम नही हुवा । कुछ दिन बाद उस जीव की भूल पड गयी और फिर कोई याद भी नही आयी ।।।२०।।

अपणा परका भया सरीसा ।। माया सब धर दाटी ।।
मूस्या जका चल्या रिण साथे ।। आ खाय ओर ही खाटी ।।२१।।

प्राण जब तक शरीर में था तब तक ऐसे प्राण से जैसे पराये लोगो को कोई लगाव नही था । इसीप्रकार शरीर छूट जाने पे अपने लोगो का बर्ताव हुवा मतलब जानेवाले प्राण के लिये अपने और पराये सरीखे बन गये । माया याने रुपये–पैसे,सोना–चांदी,हिरे जो जमीन में गाडे थे वे जमीन मे ही रह गये उसमे कुछ भी संग नही चला लेकिन रुपये–

पैसे,सोना-चांदी,हिरे यह धन जोडनेमें जिन जिन जीवोकी मुंडीयाँ मरोडी वे ऋण बदला लेनेके लिये साथमें रवाना हो गये । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,बुरे कर्म करके पैसे कमाये थे वे पैसे तो पिछे ही रह गये,साथ में नही चले लेकिन किये हुये बुरे कर्म पिछे न रहते साथ में चलने लगे और जो अनेक तरह के कष्ट और कर्म करके पैसे कमाये थे वे पैसे दुसरे ही लोग खाने लगे और रामजीके कार्यमें खर्च करने का छोडके विकारी कर्मो में खर्च करके पूरा करने लगे ।।।२१।।

सिंवर सिताब बिलम नही करणा ।। आव घटे तन छीजे ।।
बड़े दिसावर भगवंत भेज्या ।। कोई सुक्रृत सोदा कीजे ।।२२।।

तो अब इसतरहसे होता है ऐसा ज्ञान से समजकर जल्दी सहायता करनेवाले रामजी का स्मरण करो । अब स्मरण करने में विलंब मत करो । अपनी परमात्मा देव से मिली हुई आयु कम कम हो रही है और यह शरीर दिन पर दिन झिज रहा है,निर्बल हो रहा है । हमे भगवंत ने परमात्मा को मिला देनेवाले साधू जहाँ रहते ऐसे बडे देशावर भेजा है । अब यहाँ रामजी को मिलने का सुकृत सौदा करो ।।।२२।।

भरत खंड मे नर देही पाई ।। बड़े दिसावर आया ।।
सत्तगुर स्हा मिल्या सोदागर ।। बिणज करो मन भाया ।।२३।।

इस मृत्युलोकमें नौ खंड है । इस नौ खंडमें भरतखंड बडा कमाई करनेका देश है । ऐसे भरत खंडमें हमे मनुष्य देह मिला है और रामजीसे मिला देनेवाले सतगुरु सोदागर भी मिले है । इसलिये अब सभी मनुष्य भाई निजमन से रामजी पाने का पेट भर के बेपार करो ।।।२३।।

ईणी दिसावर सब संत आया ।। आइ मानव देहे पाई ।।
सत्तगुर हाट राम धन बिणज्या ।। देखो सफळ कमाई ।।२४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयों से कहते है की पहले भी काल के चपेट से अनंत संत मुक्त हुये,वे सभी संत इसी भरत खंड में आये थे और उन्होंने भी हमारे तुम्हारे जैसा मनुष्य शरीर ही धारण किया था ।।।२४।।

सासा रतन पराई पुंजी ।। सिंवरण सोदा कीजे ।।
खोटे बिणज राम रीसावे ।। खोटे नीवि छीजे ।।२५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मनुष्यदेह ७७,७६,००००० साँस का बनाया है । यह ७७,७६,००००० साँस का मनुष्यदेह तुम जीव की पुंजी नही है । यह पुंजी पराये ने दी है याने परमात्मा रामने कालसे मुक्त होने के लिये दी है मतलब यह ७७.७६,००००० साँसकी पुंजी रामजीके स्मरण का सौदा करने को दी । अगर यह पुंजी रामजीका स्मरण करने में नही लगायी और कुटुंब परीवार,मोहमाया,पांच विषय वासना यह कालके मुखमें रखनेवाली त्रिगुणी मायाके झूठे व्यापार में लगायी तो जिस रामजी ने यह

पुंजी तुम्हे दी है वह रामजी तुमपे रिसायेगा । क्योंकी झूठे बेपारमें ७७,७६,००००० साँस का मनुष्यदेह छिज रहा है ।(परममोक्ष का कारज अधूरा ही रह जायेगा ।)।।२५।।

छेसे सेंस इकीसूं सासा ।। राम भजन के लेखे ।।
अेक रेण दिवस मे अेतो दिवाळो ।। जासी जलम अलेखे ।।२६।।

परमात्मा रामजी ने हर मनुष्य जीवको ७७,७६,००००० साँस पुरे १०० सालके लिये । राम भजनके लेखे दिये है । मतलब एक दिन और रात ऐसे २४ घंटेके २१६००साँस रामभजन में लगावे ऐसे दिये है । ऐसे एक दिन और रात के २१६०० साँस,ऐसे हर दिन और रात के साँस त्रिगुणी मायाके विकारोमें लगाते ही रहे तो ७७,७६,००००० साँस कब खतम् हो जायेगे और लायी हुई पुंजी रामजीके सौदेमे न लगाते झूठे व्यापारमें लगानेसे जीवको मनुष्य देह की पुंजीका दिवाला निकल जायेगा और इतने मुश्किलसे मिला हुवा मनुष्य जनम व्यर्थ जायेगा । ।।२६।।

सागे दाम धणीका देणा ।। ईधका लाभ कमाई ।।
तोटो देतो स्हा नही धीजे ।। इण मे क्हा भलाई ।।२७।।

जैसे कोई मनुष्य किसी साहूकार से लाभ कमाई करने रकम लाते है । वह लायी हुई रकम छोड्के जो धन मिलता वह उसकी लाभ कमाई बनती । अगर साहूकार से लाई हुई रक्कम (रकम)जितनी की उतनी नही रही तो तोटा हो रहा यह समजना । यह तोटा जिस साहूकारसे रकम लिया उसे समजा तो वह सावकार बेचैन होगा । सावकार का बेचैन होना इसमे कर्म लेनेवाले की क्या भलाई रहेगी? इसीप्रकार हररोज के २१६०० साँस रामजीके स्मरण करनेके लिये जीवने रामजी साहूकार से लाया । वे २१६०० साँस रामजीके नाम लेनेमें नही लगाया और मोहमाया तथा पांच विषय विकारोके सुखोमें लगाया तो रामजी की नाराजी होगी,ऐसे रामजी के नाराजी में जीव की क्या भलाई होगी ? ।।२७।।

खोटो खरो बिणज नही समज्यो ।। हाण लाभ नही जाण्यो ।।
पड़यो दिवाळो क्हा जाय दाखे ।। ज्यूं बिणज ठगायो बाण्यो ।।२८।।

जिसप्रकार बणीया नफा होनेवाला व्यापार कौनसा है और घाटा होनेवाला व्यापार कौनसा है यह नही समजता और घाटा होनेवाले व्यापार में लगे रहता । अंतीम में दिवाला निकल जाता । ऐसा बेपारी व्यापार में ठगकर दिवाला निकल जाने से दु:खी हो जाता और ठगने की गलती करने से दिवाला निकला यह किसीके सामने उजागर होकर बोल भी नही सकता । इसीप्रकार जीव मनुष्यदेहमें आने के बाद सच्चा रामजी का स्मरण और झूठी त्रिगुणी माया के कर्म इन दोनोमें लाभ किसमे है और नुकसान किसमे है यह नही समजा और ७७,७६,००००० साँसका मनुष्य देह त्रिगुणी मायाके कर्मोमें लगाकर(कुटुंब परीवार.....मायावी आकांक्षावो में)ठगे जाता और कालके मुखमे पडता । ऐसा जीव काल

का दु:ख समजते हुये ठगे जानेके बाद किसे जाके कहेगा ? ।।२८।।

खोटे बिणज खोवसी पूंजी ।। खोटे स्हा रिसावे ।।
जम की जेळ पड़ेली गळ मे ।। राज द्वार बंधावे ।।२९।।

जैसे किसीने सावकारसे रकम उठाई और जुवा बाजी में गमाई तो साहूकार रकम लेनेवाले पे रिसाता और राजा के द्वारमें बंधाकर जेल में डलवाता । इसीप्रकार रामजी ने दिया हुवा मनुष्यदेह गमाने पे रामजी रिसाते जिससे यम जीव को नरक में डालेगा ।।।२९।।

गिणिया सास घटे दिन बीते ।। वी सासो की बारी ।।
छित्तर लाख सितंतर क्रोडूँ ।। तोइ भजन बिना भिक्कारी ।।३०।।

हर मनुष्य को ७७,७६,००००० साँस गिनके मिले है । उसमे से एक एक साँस खोटे त्रिगुणीमाया के व्यवहार में लगकर सच्चा रामजी का सौदा करने के लिये कम हो रहे है । ऐसे ७७,७६,००००० साँस मिलने पे भी रामजी के स्मरण का सौदा नही किया तो जैसे अनमोल मनुष्यतन पाने के पहले जीव ८४००००० योनी में हर सुख के चाहना के लिये भिखारी था वैसे का वैसा भिखारी बना रहेगा ।।।३०।।

खातो ध्रमराय कूं सूंप्यो ।। हिसाब हुयाँ पिस्तासी ।।
मूळ माहे मिनखा देहे हारी ।। ब्याज माहे दु:ख भारी ।।३१।।

७७,७६००००० साँस खतम् होनेके बाद मनुष्य शरीरसे प्राण निकल जाता । प्राण मनुष्य देह त्यागनेके बाद मनुष्य देहमें जो जो कर्म किये उसकी खतावणी चित्र और गुप्त धर्मराय को सौंपते । धर्मराय जीव को गुप्त और प्रगट किये हुये कर्मो का खाता सुनाता तो जीव को जिस देह से काल से मुक्त होते आता था और रामजी के महासुख में जाते आता था ऐसा मुद्दल में पाया हुवा अनमोल मनुष्यदेह हार जाने पे और जगत में मुद्दल पे जो ब्याज देना पड्ता ऐसे मनुष्य देह का मुद्दल खाने के बाद ४३,२०००० सालतक ८४००००० योनी में भारी दु:ख भोगने का ब्याज सुनकर जीव पस्तावा करने लगता ।।।३१।।

दोजख दु:ख जम की मारा ।। जलम मरण दु:ख भारी ।।
लख चौरासी वार न पारा ।। भुक्ते गो जुग चारी ।।३२।।

ब्याज में ८४ प्रकार के नरक का दु:ख और ८४ लक्ष प्रकार के शस्त्रो की जम की मार तथा ४३,२०००० साल तकके चार युग सत,त्रेता,द्वापार,कलीयुगमें ८४ लाख प्रकारके जलम-मरण का भारी दु:ख भुगतता ।।।३२।।

च्यार जुगाँ का बरस बदीता ।। लाख तीन चाळीसा ।।
अेती मार सहे सिर ऊपर ।। ओर स्हेंश्र बीसा ।।३३।।

चार युगो के ४३,२०००० साल व्यतीत होवे जबतक जीव सिरपर मार सहता । यह साधारण जीव के समज के हजारो पट मार रहता यह समजो ।।।३३।।

च्यार जुगा बिच अेकै बारा ।। ओ नर तन पावे ।।

सत्तगुरू मिल्याँ बिन जिव सूना ।। फिर चौरासी आवे ।।३४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हर नर नारी को कह रहे है की,चार जुग में ८४ लाख योनी भोगने पे एक बार मानव तन मिलता । यह मानवतन रामजी के देश में पहुँचानेवाले सतगुरु न पाये तो जीव रामजी पाने में सुने याने बिना छत्र के रह जाते । ऐसा होने पे जीव फिर ४३,२०००० साल के लिये ८४ लाख योनी में जा पड्ता ।।।३४।।

सिंवरो राम सकळ दु:ख भागे ।। सत्तगुर सरण समावो ।।
सत्तगुर हात अमर परवाना ।। नर तन पटे लिखावो ।।३५।।

ये सभी८४ प्रकारके नरकके दु:ख,जमका अनेक प्रकारका मार,४३,२०००० सालतक का ८४ लाख योनीयोमें जनमने मरने का दु:ख सतगुरु का शरणा लेकर रामनाम स्मरण करने से भाग जाते । सतगुरु के हाथ में अमरलोकमे अमरदेह देने का अमर परवाना है । इसलिये सभी नर नारीयोने मनुष्य देहमें अमरलोक पाने का सतगुरुसे पट्टा लिख लेना चाहिये ।।।३५।।

अेसा पटा लिखे गुर देवा ।। अमर आंक मुख मांई ।।
ब्होर न भवजळ आवे हंसा ।। जिवण मुक्त होय जाई ।।३६।।

सतगुरु के मुख में अमरलोक का पट्टा लिख देने को परवाना होने के कारण शरणमें आये हुये हंस को जलम मरणसे मुक्त कर अमरलोक का पट्टा लिख देते । इस सतगुरुके पट्टे से जीव एक ही मनुष्य जीवन में मुक्त हो जाता और वापिस(फिरसे)भवसागर के जनम-मरन के चक्कर में कभी नही आता ।।।३६।।

सिंवरो बेग बिलम न कीजे ।। सत्तगुराँ अग्या कीनी ।।
सासो सास रटो आ रसणा ।। राम भजन कूं दीनी ।।३७।।

जीव सतगुरुके शरणमें आतेही जीवको सतगुरु आज्ञा देते और बिना विलंब समय बेसमय रामजीका स्मरन करने लगाते । सतगुरु जानते की,मनुष्यकी आयु बहुत छोटी है और काल अनचिंत्या ही जीव को लिजाता है । इसलिये रामजी का स्मरण करने में जरासा भी विलंब नही करणे देते । जो रामजीने रसना दी है उससे साँसो साँसो में धारोधार रामभजन करवाते । ।।३७।।

ओ जग नींद सिष जद ऊठया ।। सुण सत्तगुराँ की बाणी ।।
माया मोहो भ्रम की रजनी ।। जाग्याँ सकळ बिलाणी ।।३८।।

सतगुरु के मुख से ज्ञान सुनकर माया मोह के भ्रम के निंद से शिष्य सतस्वरुप के ज्ञान से जाग उठा और उठते ही माया मोह की घनघोर भरम की रात पूरीतरह नष्ट हो गई । ।।३८।।

वाँहा गुरां की इम्रत बाणी ।। मृतक जीव जिवाया ।।
होय सरजीत राम क्हे बोल्या ।। सब्द स्रवणां आया ।। ३९ ।।

सतगुरुके अमृत बाणी को धन्य है । मायाके समान जो जीव मृतक हो गया था,वह सतगुरु के शब्द श्रवण करते ही जिवीत हो गया और राम कहने लगा ।।।३९।।

उबक्या नांव ब्रम्ह की अग्या ।। मुख बिच रस्ना हाले ।।
धँवण लगी धीर नही बंधे ।। वे सब्द गुराँ का साले ।।४०।।

सतस्वरुप ब्रम्ह के आज्ञा से नाम जीभ पे उबकने लगा और मुख में रसना नाम लेने में जोर जोर से हिलने लगी । साँसो साँसो की धवन लग गई अब जीव को धीर नही रहा और अमरदेश के गुरुजी के शब्द जल्दी अमरदेश पहुँचने के लिये खुपने लगे । ।।४०।।

(यहा तक चालीस श्लोकों का अर्थ हुवा,आगे इस ग्रंथ में ध्यान की बाते है,साठ श्लोक ध्यान संबधी बाते वर्णन की है। वह चौथे हिस्से मे भाषांतर करने का विचार है,क्यों कि यह ध्यान की सौदागिरी करके,लाभ कमाने का ज्ञान है।)

अगम चहेन सब्द से नाणी ।। मिष्ट खुल्या मुख माही ।।
सतगुरू मिले तो सब बिध जाणे ।। दूजा जाणे नाही ।।४१।।
चमक्यो मन झबूकी नाड़ी ।। रूम रूम थररावे ।।
घूमे प्राण गदगदे दीयो ।। नेण अखंड झड़ लावे ।।४२।।
इम्रत सीर ऊरस सूं उतरी ।। कंठ बिच किया पसारा ।।
सासो सास राम धुन्न लागी ।। अे देखो पतियारा ।।४३।।
कंठ बिच कंवळ फुली गुल क्यारी ।। म्हा अमीरस पीया ।।
गुप्ता नेण खुल्या सब सुझे ।। ज्यू दिल मिंदर दीया ।।४४।।
जन की जीभ कंठा बिच हाले ।। सुरत सांस कूं तोले ।।
पत्नि जेम पीव कूं प्यारी ।। सब्द सुर्त ज्या बोले ।।४५।।
इम्रत घूंटाँ सब्द अळुझे ।। धारा पूर चले से ।।
चक्री बेग चडयो हे सासा ।। द्रपण मे सब दीसे ।।४६।।
तुलवे सास गहया मन पवना ।। सतगुरू दीन संजोवे ।।
सब्द तार मे सुर्त सुंदरी ।। चुग चुग मोती पावे ।।४७।।
पूर्ण चंद पवासो हिर्दे ।। होय रया अंखड उजीयाळा ।।
निरख्या नूर झिगा मिग लागी ।। देहे बिच दीपक माळा ।।४८।।
इम्रत बूंदा प्रेम फुँवारा ।। हिर्दे होद भरीजे ।।
सुख की लेहऱ्या हंसा झूले ।। तो मेरा सतगुरू रीजे ।।४९।।
उजळी धार अमिरस पीया ।। अणंद ऊपज्या भारी ।।
फूल्या कंवळ कळी सब फूली ।। फूल रही सब क्यारी ।।५०।।
धसक्या आभ अथंग जळ उलटया ।। झरे नाभ घर झर्णा ।।

धुन्न के धोरे हरीजन भीजे ।। अे सुख सतगुरू चरणा ।।५१।।
लिव घमसाण नाभ रस्ना बिच ।। नाड़ नाड़ सब जागे ।।
सब्द घोर सू गढ गरणावे ।। नख चख मे धुन्न लागे ।।५२।।
गरज्या गिगन धड़ुक्या ईन्दर ।। घोर सुण्यो पुर जागी ।।
मंगळा चार घरोघर हुवा ।। बटण बधायाँ लागी ।।५३।।
सुरत नेण सब्द सू जोड़या ।। ज्यू निर्खे चंद चिकोरा ।।
लिव मे पोय लिया क्हाँ जावे ।। ज्यू चक्री बिच डोरा ।।५४।।
ससी के उदे कमोदण बिगसे ।। सुरत सीपं आकासा ।।
स्वातक बूंद पुकार पपइयो ।। यूं राम मिलण की आसा ।।५५।।
वाँसू पेस पयाळा आया ।। सेंस आर्ती सारी ।।
मिणीया चोक चानणा पुर मे ।। सिरपर झिग मिग न्यारी ।।५६।।
सीतळ सकळ रेत पुर राजा ।। रस्ना राम उचारे ।।
भजन प्रताप ताप नही कोई ।। सुर्ग सुख ताँ लारे ।।५७।।
उलटा सब्द पिछम दिस आया ।। बंक नाळ की बाटी ।।
धूजी ध्रण ब्रम्हंड धूज्यो ।। घोर मेर की घाटी ।।५८।।
हल्या सुमेर कंप्या सुर सारा ।। गंग चड़ी गिरनारां ।।
भिण की बीण खंच्या व्हो खेंचा ।। नार चड़ी जंत्र तारा ।।५९।।
लिव के ब्रत चड़या मन नटवा ।। सास तोल पग मेले ।।
खेच कबाण मिलाया गोसा ।। मुख सू मुंदड़ी झेले ।।६०।।
सासा बरत सुर्त हे नटणी ।। मनवे ढोल बजाया ।।
जन सुखराम निर्त कर नाचे ।। चलो अगम कू भाया ।।६१।।
करे पुकार प्राण सतगुराँ ने ।। पंथ पिछम का ओखा ।।
हुई अवाज अगम घर माही ।। घोर गिगन का गोखा ।।६२।।
धर हर गिगन धुजे देहे सारी ।। खुली मेर की पोळयाँ ।।
सूरज जाय मिल्या घर चंदा ।। युं सिख सतगुरू की झोळयाँ ।।६३।।
आगम सुण्यो संत को सुरपुर ।। घर घर बंटे बधाई ।।
जै जै सब्द दुधभी बाजे ।। संत त्रुकुटी माई ।।६४।।
ऊठी घटा अखंड झड़ लागी ।। ब्रसे अमोलक हीरा ।।
सेंहसर धारा सुखमण ओलरी ।। तट त्रबेणी तीरा ।।६५।।
अनहद घुरे गिगन ग्रणाया ।। अनंत भाण ज्याँ ऊगा ।।
तेज पुंज का सब संत दीसे ।। सतगुरू सब्दाँ पूगा ।।६६।।
मंछया भोग बिमळ जळ पीणा ।। ऋत बसंत गवेछे ।।

मान सरोवर माणक निपजे || हंसा हीर चुगे छे ||६७||
वार पार नग न्यारा दीसे || अेसा निर्मळ पाणी ||
चात्रक मोर लवे छे दादर || चकवा कहे कहाणी ||६८||
अेसा सुख ऊदासी अंतर || अमर देस तो दूरा ||
साचो सबद बोळाऊ संगी || सिर पर सतगुरू पूरा ||६९||
सुख जहाँ दु:ख दिवस ज्हाँ रजनी || ज्या जामण ज्हाँ म्रणा ||
ग्यान बिचार गुराकाँ देखो || काळ पास क्यूं पडणा ||७०||
अेऊँ चित्त बुध मन पवना || अटक रहया सब याँई ||
सुर्त ओर सब्द चल्या दोऊँ आगे || ममो मेर के माँई ||७१||
भोडळ भवन भाण अेक ऊगा || अेक मेक उजियाळा ||
दीप दीप न्यारा सब दीसे || सुर्ग ओर मध पंयाळा ||७२||
चवदा भवन चानणो दीसे || द्रब नेण ज्यां खुल्या ||
अमर देस तो दूरा इण सूं || अे आरंभ सब ऊला ||७३||
तीन लोक अर भवन चतुर दस || अेक काळ को ग्रासा ||
सतगुरू म्हेर बिना नही छूटे || जन्म मरण भव त्रासा ||७४||
चोकी फिरे सब्द की चहुँ दिस || सतगुरू पोराँ जागे ||
नोपत नांव फरूकत नेजा || जुरा म्रण भौ भागे ||७५||
बिन्नत ज्हाँ बिवाण की छाया || पाँच ग्यान जिव पावे ||
यूं हमाव सतगुरू की सत्ता || अमर लोक ने जावे ||७६||
अमर देस संत अनंत पहुँता || उपज्या केवळ ग्याना ||
मेटे कोण गुरांका लिखिया || अमर अंक प्रवाना ||७७||
अेक अमर बिवाण अगम सू आया || वोहे आदू सरणा ||
संत उच्छाव बधाई आगम || मारग केसर बरणा ||७८||
अधर दीप संत न की सत्ता || अमर देस वो नामा ||
अनंद रूप अनंत सुख सागर || नही दु:ख बिसरामा ||७९||
गर्जे गिगन गेब की आवाजा || अणंद बायरा बाजे ||
भळके भवन अगम उजीयाळा || सोभा अनंत बिराजे ||८०||
कोट भाण नख चख की सोभा || झळकत द्रब सरीरा ||
सोव्हत सभा भवन मे पूरे || ज्यूँ चोक चंद्र मणी हीरा ||८१||
म्रत लोक मळ मुत्र सरीरा || तेज पुँज सुर बासा ||
द्रब सरीर देत संताँ का || प्रम जोत प्रकासा ||८२||
अनंत संत ज्हाँ अमर जुगा जुग || गिणतां वार न पारा ||

सर्ब सुख जहाँ अग्याकारी ।। मगनी मूनी सारा ।।८३।।
ज्हाँ जलम म्रण का नाँव न जाणे ।। काळ क्रम दोई काँपे ।।
ओर धाम सुख दुख के दाता ।। जुरा अण चिंता झाँपे ।।८४।।
सुर्ग भोग सुख मद मत्सरता ।। म्रत लोक भव सोगा ।।
लोक पँयाळ जाय दिन दु:ख मे ।। यू हर्क सोग तिहुं लोगा ।।८५।।
वो मंगळ देस राज संताँ को ।। रिध सिध सब पग पूजे ।।
चक्कर गेंब फिरे जन द्वाई ।। काळ कंपे भय धूजे ।।८६।।
नख चख बिचे अखंड धुन ऊठे ।। जा दिन भये समादी ।।
जगमे रहे जिते सुख अेसा ।। अंत काळ व्हे सादी ।।८७।।
आवे बिवाण मोख के मारग ।। बाजे दुधंभी बाजा ।।
जै जै करे इंन्द्र ब्रम्हादिक ।। साध सकळ सिरताजा ।।८८।।
ऊंची द्रष्ट द्रसण काजा ।। पेफ घटा पुर छाया ।।
पावन करे सकळ सुर बंछे ।। बंछे बैकूंट राया ।।८९।।
सुरपत क्हे भवन सब सूना ।। ब्रम्ह लोक किन काजा ।।
जत तप सत बेकुंट उदासी ।। ज्हाँ नही रेत कों राजा ।।९०।।
कमज्या काज गया पर मुलकाँ ।। कर कमज्या घर आया ।।
दु:ख सुख सहया पूँछिया कुसळाँ ।। माळ अलेखे लाया ।।९१।।
जलम्या मर्‍या सही तिस खुद्या ।। बस्या लोक बिराणा ।।
पहुंता निझ नग्र स्हा बडनामी ।। तीन लोक तज ढाणा ।।९२।।
इण अमर सब्द अम्र का दीया ।। भज्या सो अमर हुवा ।।
जाण अजाण अम्र फल खाया ।। इम्रत पी कुण मूवा ।।९३।।

।। दोहा ।।

गिगन गर्जे गेब का ।। जेसी गोरम गाज ।।
संत द्वाई उण देस मे ।। ओर संतो ही को राज ।।९४।।
ब्रम्ह माही सुख दु:ख नही ।। अर माया दु:ख को रूप ।।
अमर सुख माया अखंड ।। सुखिया वो देस अनूप ।।९५।।
चंद्रमण चहुँ दिस जड़या ।। सकळ भवन उजियाळ ।।
जन सुखिया उण देस मे ।। कोइ काना सुण्यो हन काळ ।।९६।।
सतगुरू छाँय हमाव ज्यू ।। बिचर्‍या अमर बिवाण ।।
सुखिया सत्ता गेब की ।। उपज्यो केवळ ग्यान ।।९७।।
सुखिया समे चेत्यो भलो ।। गुरू बिरम की ब्हार ।।
सिर्जण हार दीज्यो सदा ।। म्हणे सतगुराँ को दीदार ।।९८।।

नर देही पाई नराँ ।। जो उपज्यो संसार ।।
तो अे सोदा अे सब्द सुण ।। कीज्यो बारम बार ।।९९।।
पापी कूं जम द्वार हे ।। पुन्नी कूं सुर लोक ।।
सुर्गुण भक्ति बिस्न पद ।। निर्गुण भक्ति मोख ।।१००।।

।। इति सौदागिरी ग्रंथका भाषांतर अपूर्ण ।।